317hi20

20

क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय दल

भारतीय दलीय व्यवस्था की एक विचार करने योग्य विशेषता बड़ी संख्या में क्षेत्रीय दलों का होना है। क्षेत्रीय दल से हमारा अर्थ ऐसे दल से है जो एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र में कार्य करता है और इसकी गतिविधियां केवल एक अथवा मुट्ठी भर राज्यों तक सीमित होती हैं। दूसरे शब्दों में, राष्ट्रीय दलों के व्यापक विभिन्न प्रकार के हितों की तुलना में क्षेत्रीय दल एक विशेष क्षेत्र के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सरल शब्दों में, क्षेत्रीय दल अखिल भारतीय दलों से अपने दृष्टिकोण और हितों की दृष्टि से दोनों में बहुत अंतर है। वे केवल राज्य अथवा क्षेत्रीय स्तर पर सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं और राष्ट्रीय सरकार पर नियंत्रण बनाने की इच्छा नहीं रखते। यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारत में क्षेत्रीय दलों की संख्या राष्ट्रीय दलों से काफी अधिक है और कुछ राज्यों में क्षेत्रीय दल शासन भी कर रहे हैं; जैसे पंजाब, तमिलनाडु, कर्नाटक, आसाम, जम्मू और कश्मीर आदि।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप ;

- बढ़ते क्षेत्रवाद के लिए उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- बढ़ते क्षेत्रवाद के लिए उत्तरदायी कारकों का निर्धारण कर सकेंगे;
- क्षेत्रीय दलों की भूमिका के बारे में जागरूकता निर्मित कर सकेंगे; तथा
- क्षेत्रीय दलों और राष्ट्रीय दलों में अंतर कर सकेंगे।

20.1 क्षेत्रवाद

क्षेत्रवाद शब्द को दो अर्थों में समझा जाता है। नकारात्मक भाव में इसका अर्थ है, अपने क्षेत्र को देश अथवा राज्य की तुलना में अधिक अपना मानना। सकारात्मक दृष्टि से यह राजनीतिक गुण है जो अपने क्षेत्र, संस्कृति, भाषा इत्यादि के साथ जुड़े लोगों का अपनत्व है जो अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना चाहता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सकारात्मक क्षेत्रवाद तब तक स्वागत योग्य है जब तक यह संयुक्त भाषा, धर्म और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर भाईचारे और साझेपन (समानता) को बढ़ाने में प्रोत्साहन देता है।

टिप्पणी

नकारात्मक भाव में क्षेत्रवाद देश की एकता और अखण्डता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। भारतीय संदर्भ में प्राय: क्षेत्रवाद शब्द का नकारात्मक भाव में प्रयोग किया जाता रहा है। क्षेत्रवाद की भावना या तो शासन करने वाले अधिकारियों द्वारा एक क्षेत्र विशेष की निरंतर अवहेलना अथवा भेदभाव सह रहे पिछड़े लोगों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ने के फलस्वरूप उभर सकती है। आमतौर पर कुछ राजनीतिक नेता क्षेत्रवाद की भावना को प्रोत्साहित करते रहते हैं ताकि एक विशेष क्षेत्र अथवा लोगों के समूह पर उनका नियंत्रण बना रहे।

पाठगत प्रश्न 20.1

रिक्त स्थान भरिए

(क) सकारात्मक भाव में क्षेत्रवाद का अर्थ लोगों का अपने ..... और ..... प्यार है।

(ख) क्षेत्रीय दल का अर्थ है ऐसा दल जो एक सीमित ..... क्षेत्र में कार्य करता है।

(ग) भारत में ..... क्षेत्रीय दल हैं।

20.2 क्षेत्रवाद के भिन्न रूप

भारत में क्षेत्रवाद ने विभिन्न रूप धारण कर लिए हैं, जैसे:

(क) राज्य स्वायत्तता की मांग: क्षेत्रवाद प्राय: राज्यों के लिए केन्द्र से अधिक स्वायत्तता की मांग पर बल देता है। राज्यों के मामले में केन्द्र के बढ़ते हस्तक्षेप ने क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काया है। भारतीय संघ के अंतर्गत कुछ राज्यों के भीतर कुछ क्षेत्रों ने स्वायत्तता की मांग को उठाया है।

(ख) संघ से अलग होना: यह क्षेत्रवाद का खतरनाक रूप है। यह तब उभरता है जब राज्य केन्द्र से अलगाव की मांग करते हैं और अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

राज्यों के बीच नदी जल में भागीदारी पर विवाद, राज्यों द्वारा बहुसंख्यकों की भाषा तथा नौकरियों के अवसरों में अपने ही राज्य के लोगों को प्राथमिकता देने से भी क्षेत्रवाद की भावना उभर कर आई है। पिछड़े राज्यों से रोजगार के अवसरों के लिए विकसित राज्यों में लोगों के स्थानान्तरण से स्थान्तरित लोगों के प्रति आक्रामक रवैया जन्म लेता है। उदाहरण के लिए कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में चल रही समस्याएं।

20.3 भारत में क्षेत्रवाद का विकास

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में क्षेत्रवाद कोई नई घटना नहीं है। स्वतंत्रता पूर्व के दिनों में ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने इस भावना को प्रोत्साहित किया और राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भारत पर अपनी पकड़ बनाए रखने की दृष्टि से उन्होंने जानबूझकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को पूरे देश के बजाय अपने क्षेत्र के विषय में सोचने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता के बाद नेताओं ने लोगों में यह भावना भरने का प्रयास किया कि वे एक ही देश से संबंध रखते हैं। संविधान निर्माताओं ने इकहरी नागरिकता शुरू करके इस उद्देश्य को प्राप्त करना चाहा। इसी उद्देश्य से एक एकीकृत न्याय व्यवस्था, अखिल भारतीय सेवाएं तथा एक मजबूत केन्द्र सरकार को व्यावहारिक रूप देने पर बल दिया गया। लेकिन एक विशाल देश होने की दृष्टि से भारत में शीघ्र ही सांस्कृतिक क्षेत्रवाद दिखाई देने लगा।

क्षेत्रवाद की पहली अभिव्यक्ति भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग के रूप में हुई लेकिन क्षेत्रवाद का सबसे प्रभावशाली प्रदर्शन 1960 के दशक में तमिलनाडु में कांग्रेस के विरुद्ध डी. एम. के. की जीत थी। शुरू में केन्द्रीय नेतृत्व ने महसूस किया कि क्षेत्रवाद केवल तमिलनाडु तक सीमित एक कारक मात्र है और यह राष्ट्रीय एकता के लिए कोई खतरा नहीं है। परंतु यह अनुमान गलत था। शीघ्र ही पंजाब में अकाली आंदोलन ने तेजी पकड़ ली और जम्मू कश्मीर में शेख अब्दुल्ला ने नेशनल कांफ्रेंस को पुनर्जीवित कर दिया। इन प्रारम्भिक वर्षों में सभी भारतीय राजनीतिक दलों ने इन क्षेत्रीय ताकतों के साथ इस तर्क के आधार पर सामंजस्य स्थापित करना जारी रखा कि अन्ततः वे क्षेत्रीय दलों के आधार में सेंध लगाने में सफल हो जाएंगे और उन्हें अपने संगठन में समाहित कर लेंगे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसे 1947 से 1967 तक सत्ता पर एकाधिकार प्राप्त था और जो क्षेत्रीय दलों के प्रति कभी गरम, कभी नरम रुख अपनाती रही उसने भी क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने में योगदान दिया। इसने क्षेत्रीय ताकतों को अपनी सुविधानुसार समायोजित किया और जब ये ताकतें इसके विरुद्ध खड़ी हो गईं तो इसने शोर मचाया। स्थानीय कांग्रेसी नेताओं ने क्षेत्रवाद में वृद्धि को प्रोत्साहित किया और स्थानीय पार्टी संगठन पर केन्द्रीय नेताओं से अपनी मोल भाव की ताकत को बढ़ाने की दृष्टि से अपनी पकड़ मजबूत की। वास्तव में केन्द्रीय और क्षेत्रीय नेताओं में मजबूत संबंध विकसित हुए। केन्द्रीय और क्षेत्रीय नेतृत्व के बीच इस निकटता के संबंधों ने क्षेत्रवाद को बहुत बढ़ावा दिया।

पाठगत प्रश्न 20.2

सही अथवा गलत चुनिए–

(क) क्षेत्रवाद ने प्रायः राज्यों को केन्द्र से अधिक स्वायत्तता की मांग करने हेतु उकसाया है।
(सही/गलत)

(ख) राज्यों के बीच नदी जल में भागीदारी पर विवाद, बहुसंख्यकों की भाषा को प्राथमिकता देने की इच्छा ने भी क्षेत्रवाद की भावनाओं को उभारा है।
(सही/गलत)

20.4 क्षेत्रवाद की वृद्धि के कारण

भारत में क्षेत्रवाद को बढ़ाने में अनेक कारकों का योगदान है।

सबसे पहले क्षेत्रवाद राष्ट्रीय सरकार द्वारा सभी लोगों और समूहों पर एक विशेष विचारधारा, भाषा और सांस्कृतिक प्रतिमान थोपने के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में दिखाई दिया। अतः दक्षिण के राज्यों ने सरकारी भाषा के रूप में हिन्दी थोपने का विरोध किया क्योंकि उन्हें डर था कि इससे उत्तर का प्रभुत्व स्थापित हो जाएगा। इसी प्रकार आसाम में अपनी संस्कृति को बचाए रखने के लिए असम के लोगों ने विदेशियों के विरुद्ध आंदोलन शुरू किया।

दूसरे, शासक दलों द्वारा किसी एक इलाके अथवा क्षेत्र की निरंतर अवहेलना और प्रशासनिक तथा राजनीतिक शक्तियों के एक जगह केन्द्रित होने से सत्ता के विकेन्द्रीकरण तथा एक भाषायी राज्य को दो भागों में बांटने की मांग उठी। कई बार भूमि पुत्रों ने उपेक्षित समूहों और राज्य के इलाकों के हितों में वृद्धि के लिए अनेक मांगों एवं सिद्धांतों को प्रस्तुत किया है।

तीसरे, भारतीय संघीय व्यवस्था की विभिन्न इकाइयों की अपने उप सांस्कृतिक क्षेत्रों को बनाए रखने तथा स्व-शासन की अधिक मात्रा की इच्छा ने क्षेत्रवाद को बढ़ावा दिया है तथा अधिक स्वायत्तता की मांग को उभारा है।

चौथे, क्षेत्रीय अभिजात्य/प्रतिष्ठितों की सत्ता पर कब्जा करने की इच्छा ने भी क्षेत्रवाद को उदित किया है। यह अच्छी तरह ज्ञात है कि डी.एम.के., ए.आई.ए.डी.एम.के., अकाली दल, तेलुगु देशम, असम गण परिषद इत्यादि राजनीतिक दलों ने सत्ता पर कब्जा करने के लिए क्षेत्रवाद को प्रोत्साहित किया है।

पांचवे, आधुनिकीकरण की ताकतों तथा जनसाधारण की सहभागिता के बीच अंत:क्रिया ने भी भारत में क्षेत्रवाद को बढ़ाने में योगदान दिया है क्योंकि अभी देश राष्ट्र-राज्य के लक्ष्य को साकार कर पाने से दूर है। विभिन्न समूह अपने सामूहिक हितों को राष्ट्रीय हितों के साथ जोड़ पाने में असफल रहे हैं, इसलिए क्षेत्रवाद अभी एक प्रमुख समस्या बना हुआ है।

अंत में, पिछड़े क्षेत्रों के लोगों में बढ़ती जागरूकता के कारण उनके साथ भेद-भाव किया जाता रहा है, ने भी क्षेत्रवाद को बढ़ावा दिया है। स्थानीय राजनीतिक नेताओं ने इस कारक को अपने तरह से प्रयोग किया और लोगों में यह भावना भरने का प्रयास किया कि केन्द्रीय सरकार कुछ इलाकों के सामाजिक और आर्थिक विकास की अवहेलना करके जानबूझ कर क्षेत्रीय असंतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रही है।

20.5 क्षेत्रीय दलों की भूमिका

यद्यपि क्षेत्रीय दल काफी सीमित क्षेत्र में काम करते हैं और केवल सीमित उद्देश्यों को ही आगे बढ़ाते हैं, तथापि उन्होंने राज्य के साथ-साथ राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने कई राज्यों में सरकारें बनाई हैं और अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को ठोस रूप देने का प्रयास किया है। विभिन्न राज्यों में सरकार बनाने वाले कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रीय दलों में तमिलनाडु के डी.एम.के. तथा ए.आई.ए.डी.एम.के., जम्मू कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस, आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम, आसाम में असम गण परिषद्, गोवा में महाराष्ट्रवादी गोमान्तक पार्टी, मिजोरम में मिजो नेशनल फ्रंट, सिक्किम में सिक्किम संग्राम परिषद्, मेघालय में आल पार्टी हिल लीडर्स काफ्रेंस और हरियाणा में इन्डियन नेशनल लोक दल सम्मिलित हैं। कुछ क्षेत्रीय दल 1967 के चौथे आम चुनावों के बाद विभिन्न राज्यों में बनी मिलीजुली सरकारों में भागीदार थे। कुछ समय पहले केन्द्र में भी क्षेत्रीय दल कांग्रेस की सरकार गठित करने में सहायता करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल रहे हैं। एक क्षेत्रीय दल डी.एम.के. ने 1969 में कांग्रेस में विभाजन के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी की सरकार को समर्थन दिया और संसद में बहुमत खो चुकने के बाद भी उसे सरकार चलाए रखने की क्षमता प्रदान की। तेलुगु देशम, संयुक्त मोर्चा और बाद में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का शक्ति स्तम्भ थी। क्षेत्रीय दलों के प्रतिनिधि अपने क्षेत्र के मुद्दों पर संसद का ध्यान आकर्षित करते हैं और अपने हितों में वृद्धि के लिए सरकार की नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

परंतु क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की कदाचित सबसे बड़ी सेवा यह है कि उन्होंने दूरस्थ क्षेत्रों के विभिन्न राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर लोगों का ध्यान केन्द्रित किया है और उनकी राजनीतिक जागरूकता में योगदान दिया है। यही नहीं, क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों को यह अनुभव करवाने में भी सफल रहे हैं कि वे क्षेत्रीय समस्याओं के प्रति उदासीनता का रवैया अपना कर नहीं चल सकते और उन्हें उनकी (क्षेत्रीय) समस्याओं को हल करने में गहरी रुचि लेने के लिए विवश कर दिया है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने न केवल क्षेत्रीय राजनीति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है अपितु राष्ट्रीय राजनीति पर भी गहरा प्रभाव डाला है।

पाठगत प्रश्न 20.3

रिक्त स्थान भरिए –

(क) भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में ..... कोई नई घटना नहीं है।

(ख) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ..... के बीच सत्ता पर एकाधिकार था।

(ग) ..... और ..... नेताओं के बीच निकट के संबंधों ने क्षेत्रवाद को बढ़ावा दिया है।

(घ) शासक दलों द्वारा किसी क्षेत्र की निरंतर अवहेलना क्षेत्रवाद का एक ..... है।

20.6 क्षेत्रीय असंतुलन को ठीक करने के उपाय

क्षेत्रीय असंतुलन भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। कभी-कभी इसने देश के लिए खतरा भी पैदा किया है। इसलिए इन प्रवृत्तियों को कम करने के लिए कदम उठाना आवश्यक है। ऐसे कुछ उपाय निम्नलिखित हो सकते हैं:

(क) उपेक्षित क्षेत्रों के समान विकास को बढ़ावा देना ताकि वे स्वयं को राष्ट्रीय मुख्यधारा का एक भाग समझें।

(ख) केन्द्रीय सरकार को राज्य के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए जब तक कि यह राष्ट्रीय हितों के लिए अनिवार्य न हो।

(ग) लोगों की समस्याओं को शांतिपूर्ण और संवैधानिक ढंग से हल करना चाहिए। राजनीतिज्ञों को क्षेत्रीय मांगों के मुद्दे का दुरुपयोग नहीं करने देना चाहिए।

(घ) राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों के अतिरिक्त, राज्यों को अपने काम स्वतंत्र रूप से करने देना चाहिए।

(ङ) राज्यों के हितार्थ केन्द्र-राज्य संबंधों में परिवर्तन करना आवश्यक है। इससे, लोगों की क्षेत्रीय भावनाओं पर काबू पाने में तथा राष्ट्र के प्रति जुड़ाव की भावना विकसित करने में सहायता मिलेगी।

पाठगत प्रश्न 20.4

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सीमित भौगोलिक क्षेत्र में आमतौर पर काम करने वाले दल को कहते हैं –
   - (क) राजनीतिक दल
   - (ख) राष्ट्रीय दल
   - (ग) क्षेत्रीय दल
   - (घ) उपरोक्त सभी
2. क्षेत्रीय दलों की वृद्धि में योगदान करने वाले लोग
   - (क) सामाजिक
   - (ख) जातीय

(ग) सांस्कृतिक और भौगोलिक

(घ) उपरोक्त सभी

आपने क्या सीखा

क्षेत्रवाद का अर्थ है पूरे देश के मुकाबले एक क्षेत्र विशेष अथवा राज्य के प्रति गहरा लगाव। यह भावना एक विशेष क्षेत्र के लोगों की निरंतर उपेक्षा से उभरती है अथवा इस कारण से भी कि यह क्षेत्र विशेष के लोग राजनीतिक दृष्टि से जागरूक हो जाते हैं और दिखने वाले भेदभाव के विरुद्ध लड़ना चाहते हैं। क्षेत्रवाद एक समस्या है क्योंकि यह देश की एकता और अखण्डता के लिए खतरा है। क्षेत्रवाद की अभिव्यक्ति के दो प्रमुख उदाहरण हैं:

(क) अलग राज्य के लिए आंदोलन, उदाहरण के लिए तैलंगाना, बोडोलैण्ड और गोरखालैण्ड इत्यादि के लिए मांग,

(ख) भारतीय संघ से अलग होने के प्रयास,

उदाहरण के लिए-खालिस्तान की मांग, नागालैण्ड की मांग इत्यादि।

पाठांत प्रश्न

1. क्षेत्रवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए? यह खतरनाक क्यों है?
2. क्षेत्रवाद के रूपों के बारे में चर्चा कीजिए।
3. क्षेत्रीय दलों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

गत प्रश्नों के उत्तर

20.1

(क) क्षेत्र, संस्कृति, भाषा

(ख) भौगोलिक

(ग) बड़ी

20.2

(क) सही

(ख) सही

20.3

(क) क्षेत्रवाद

(ख) 1947-1967

(ग) केन्द्रीय, क्षेत्रीय

(घ) कारण/कारक

20.4

(1) ग

(2) घ

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खण्ड 20.1 देखें
2. खण्ड 20.2 देखें
3. खण्ड 20.5 देखें